सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 10 ● अंक: 302 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 10 दिसम्बर, 2024
मूल्य ₹ 3/-

फिजिशियन इलाज करता है, लेकिन प्रकृति ठीक करती है।
-हिप्पोक्रेटीस

भारत की डब्ल्यूटीसी फाइनल में खेलने की... 7 | अन्नदाताओं से सरकार क्यों हो... 3 | जीडीपी गिर रही है और महंगाई... 2

सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव!

जगदीप धनखड़ को हटाने के लिए समूचा विपक्ष एक साथ

» सांसदों का आरोप ऐसा पक्षपाती सभापति नहीं देखा आजतक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बीते दो दिनों से सभापति जगदीप धनखड़ व्यवहार अचंभित करने वाला था। वह प्यार से बात कर रहे थे और राज्यसभा सांसदों को अपने साथ चाय पर भी आमंत्रित कर रहे थे। शायद उन्हें आभास हो गया था या यूं कहें कि राजनीतिक मुखबिरों ने खबर उन तक पहुंचा दी थी कि विपक्ष आप को हटाने की तैयारी कर रहा है।

हुआ वहीं सुबह एक न्यूज एजेंसी के जरिये खबर आम हो गयी कि विपक्ष राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की तैयारी पूरी कर चुका है। 70 विपक्षी सांसदों ने प्रस्ताव पर दस्तखत कर दिये हैं। जिनमें समाजवादी पार्टी, तृणमूल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी शामिल है।

आखिर क्यों पहुंची यहां तक बात

दरअसल, पूर्व में राज्यसभा की कार्यवाही के दौरान सपा सांसद जया बच्चन ने सभापति जगदीप धनखड़ की टोन पर आपत्ति जताई थी। धनखड़ ने सपा सांसद को जया अमिताभ बच्चन कहकर संबोधित किया था। इस पर जया ने कहा था- मैं कलाकार हूं। बॉडी लैंग्वेज समझती हूं। एक्सप्रेशन समझती हूं। मुझे माफ कीजिए, लेकिन आपके बोलने का टोन स्वीकार नहीं है। जया की इस बात से धनखड़ नाराज हो गए। उन्होंने कहा था आप मेरी टोन पर सवाल उठा रही हैं। इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा। आप सेलिब्रिटी हों या कोई और, आपको डेकोरम बनाना होगा। आप सीनियर मेंबर होकर चेयर को नीचा दिखा रही हैं। बहस के बाद धनखड़ ने राज्यसभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी थी।

यहीं से बिगड़ी बात

बस इस बात के बाद सभापति और विपक्षी सदस्यों में एक गहरी लकीर खिच गयी और विपक्षी सांसद अविश्वास प्रस्ताव की तैयारी में लग गये। अविश्वास प्रस्ताव उसी समय तैयार कर लिया गया था और लगभग 87 सदस्यों ने उस पर हास्ताक्षर भी कर दिये थे। लेकिन दूसरे दलों के सांसद नहीं तैयार हुए थे। हाल की घटनाओं के बाद दूसरे दलों के सदस्य भी अविश्वास प्रस्ताव पर सिग्नेचर करने के लिए तैयार हो गये।

आज सुबह की चाय पर चर्चा

दरअस्ल राज्यसभा के सभापति और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने संसद भवन स्थित अपने कक्ष में तमाम विपक्षी नेताओं को बुलाया और चाय पर चर्चा की। उन्होंने सोमवार की शाम को भी विपक्षी सासंदों के साथ बात की थी। वह चाहते हैं कि सदन चले और इसके लिए विपक्षी सांसदों की क्या मांग है उसपर गतिरोध खत्म हो। सभापति ने गतिरोध समाप्त करने के लिए आगे और चर्चा करने का निर्णय लिया है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा है प्रस्ताव

अविश्वास प्रस्ताव, लोकतंत्र में विपक्षी दलों का एक महत्वपूर्ण हथियार होता है, जिससे वे सरकार या संसद के प्रमुख पदों पर आसीन व्यक्तियों की कार्यशैली पर सवाल उठा सकते हैं। सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। यह प्रक्रिया विपक्ष को अपनी चिंताओं और असंतोष को व्यक्त करने का अवसर देती है। हालांकि, इसका उपयोग बिना उचित कारण के नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे संसद की कार्यवाही पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। सभापति का कर्तव्य होता है कि वे पूरी निष्पक्षता और पारदर्शिता से अपनी जिम्मेदारियों को निभाएं, ताकि संसद की कार्यवाही सुचारू रूप से चल सके।

क्या है तकनीकी पहलू

उपराष्ट्रपति राज्यसभा के पदेन सभापति होते हैं। उन्हें हटाने के लिए राज्यसभा में बहुमत से प्रस्ताव पारित कराना होगा। प्रस्ताव लाने से 14 दिन पहले नोटिस भी देना होगा। इसके बाद लोकसभा में भी प्रस्ताव पारित कराना जरूरी होगा, क्योंकि राज्यसभा का सभापति उपराष्ट्रपति की पदेन भूमिका होती है। लोकसभा में एनडीए के 293 और इंडिया गठबधंन के 236 सदस्य हैं। बहुमत 272 पर है। विपक्ष अन्य 14 सदस्यों को साधे तो भी प्रस्ताव पारित होना मुश्किल लग रहा है। जब प्रस्ताव पेश होगा और चर्चा होगी, तब सामान्य न्याय सिद्धांत के मुताबिक सभापति राज्यसभा पीठ पर नहीं बैठेंगे।

जीडीपी गिर रही है और महंगाई बढ़ रही है : अखिलेश यादव

» बोले- भाजपा सरकार की गलत नीतियों के कारण लगातार बढ़ रही महंगाई

» देश में नफरत फैला रही है बीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार की गलत नीतियों के कारण महंगाई लगातार बढ़ रही है। जीडीपी लगातार गिर रही है। आम जनता महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी से त्रस्त है। भाजपा को आम जनता की परेशानियों की कोई चिंता नहीं है।

उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार चंद पूंजीपतियों के लिए काम कर रही है। मध्यम वर्ग, गरीब परेशान है। दाल, तेल, मसाले, सब्जियों से लेकर खाने पीने तक की हर चीज महंगी होने से लोगों की जेब पर गहरा असर पड़ रहा है। पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस के दाम पहले से ही बढ़े हुए हैं। लोगों के पास काम नहीं है। उनकी आय भी कम हो गई है जबकि खर्च बढ़ गया है।

नकारात्मक एजेंडे पर काम कर रही भाजपा

अखिलेश यादव के मुताबिक भाजपा सरकार देश में नफरत फैला रही है। सौहार्द को खत्म कर रही है। देश को साम्प्रदायिक आग में झोंक रही है। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार से ध्यान हटाकर सरकार जनता को आपस में लड़ाने का काम कर रही है। भाजपा सरकार पूरी तरह से नकारात्मक एजेंडे पर काम कर रही है। नोटबंदी, जीएसटी से व्यापार चौपट हो गया है, जिसके कारण देश की अर्थव्यवस्था तबाह हो गई है।

जमकर मुनाफाखोरी

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की मुनाफाखोरी और कमीशन खोरी की नीति ने देश की अर्थव्यवस्था को रसातल में धकेल दिया है। भाजपा बड़े उद्योगपतियों और व्यवसायियों से जमकर चंदा उगाही करती है और उन्हें मुनाफा कमाने की पूरी छूट देती है। इस सरकार में हर चीज में मनमानी लूट चल रही है, जिसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ रहा है। लेकिन अब जनता भाजपा की चालों को समझ चुकी है। वह सन् 2027 में उसको सत्ता से हटाकर पीडीए की समाजवादी सरकार बनाने को संकल्पित है।

हर मोर्चे पर विफल सरकार

उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार हर मोर्चे पर विफल है। विकास कार्य ठप है। इस सरकार की योजनाएं पूरी तरह से गरीब विरोधी हैं। महंगाई रोकने के लिए भाजपा सरकार के पास न तो कोई नीति है और न उसकी नीयत है। इसने आम जनता को अपने हाल पर छोड़ दिया है।

सरकारी पैसों पर नीतीश की यात्रा : तेजस्वी

» बोले- 15 दिनों की इस यात्रा में 2 अरब 25 करोड़ 78 लाख रुपए आएगा खर्च

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार महिला संवाद यात्रा पर निकलने वाले हैं। इससे पहले विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने मंगलवार को इस यात्रा पर होने वाले सरकारी खर्च को लेकर तंज कसा है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कहा कि मात्र 15 दिनों की यात्रा में अरबों रुपए बिहार के खजाने से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने प्रचार-प्रसार की बाढ़ में बहाने जा रहे है। उन्होंने कैबिनेट नोट जारी करते हुए अपने प्रेस बयान में कहा, 2 अरब 25 करोड़ 78 लाख रुपए।

जी हां! आपने सही सुना और ये कैबिनेट नोट भी सही पढ़ा। उन्होंने आगे सवाल करते हुए कहा कि 20 वर्ष तक बिहार को बेतहाशा बेरोजगारी, बड़े पैमाने पर पलायन, जानलेवा महंगाई, अपराध तथा भीषण भ्रष्टाचार की आग में झोंक कर नीतीश कुमार द्वारा पिछड़े व गरीब राज्य की गरीब जनता का 225,78,00,000 रुपए अपनी चुनावी पिकनिक पर फिजूलखर्ची करना क्या जायज है? तेजस्वी ने कहा, जीविका दीदियों के दर्द, भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ ध्वस्त हुए सैंकड़ों पुल-पुलिया, अनियंत्रित अपराध, बेलगाम महंगाई, रिकॉर्डतोड़ बेरोजगारी, प्रशासनिक अराजकता,

अधिकारियों के हाथों लुटाए जा रहे अरबों रुपये

तेजस्वी ने कहा कि छात्राओं और महिलाओं के लिए जमीन पर कुछ नहीं लेकिन प्रचार के लिए अरबों रुपयों को अधिकारियों के हाथों लुटाया जा रहा है। संवाद के ' शून्य मुद्दों' पर नीतीश कुमार 225,78,00,000 करोड़ रुपए खर्च करने जा रहे है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार किसी भी चुनाव के पूर्व प्रदेश के दौरे पर निकलते है। अगले साल बिहार विधानसभा चुनाव होने हैं। इससे पहले वे महिला संवाद यात्रा पर निकलने वाले हैं।

थानों व ब्लॉक में अन्याय अत्याचार व रिश्वतखोरी की पराकाष्ठा, जहरीली शराब से हजारों लोगों की मौत, शराबबंदी की विफलता, स्मार्ट मीटर की भारी धोखाधड़ी, संस्थागत भ्रष्टाचार, अफसरशाही इत्यादि को कोई भी यात्रा अब इनके विनाश की मात्रा को नहीं छिपा सकती?

भाजपा ने शेयर किया शीश महल का वीडियो

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भाजपा ने हमेशा अरविंद केजरीवाल पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है। उन्होंने मंगलवार को दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री के घर का एक वीडियो जारी किया, जिसे वह शीश महल कहते है। भाजपा ने यह भी आरोप लगाया है कि अरविंद केजरीवाल ने अभी तक दिल्ली के 6 फ्लैगस्टाफ रोड स्थित आधिकारिक बंगले को औपचारिक रूप से खाली नहीं किया है।

दिल्ली भाजपा प्रमुख वीरेंद्र सचदेवा ने एक्स पर एक वीडियो जारी किया, जिसमें घर का दौरा और फिटिंग और फिक्सचर का विवरण दिया गया है। शीश महल एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल भाजपा बंगले को निशाना बनाने के लिए करती है। पार्टी ने इसके निर्माण में कथित अनियमितताओं और महंगे इंटीरियर और घरेलू सामानों पर खर्च किए गए पैसे को लेकर अभियान चलाया।

जौहर यूनिवर्सिटी में शत्रु सम्पत्ति की जिओ टैगिंग कर सीमांकन की हुई कार्यवाही

» नापतोल डिफरेंशियल ग्लोबल पोजीशन सिस्टम मशीन द्वारा की जा रही है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता मोहम्मद आजम खान का ड्रीम प्रोजेक्ट मोहम्मद अली जौहर यूनिवर्सिटी पर शत्रु संपत्ति कबजाने के मामले सन 2019 में दर्ज किए गए थे। इसके बाद कार्रवाई करते हुए जौहर यूनिवर्सिटी परिसर से 138000 वर्ग मीटर भूमि को शत्रु संपत्ति विभाग द्वारा कब्जा मुक्त कराया गया था।

अब इसी भूमि को शत्रु संपत्ति विभाग गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जिओ टैगिंग कर सीमांकन किया जा रहा है ताकि इंटरनेट द्वारा कहीं से भी उसको गूगल मैप पर देखा जा सके और यदि शत्रु संपत्ति विभाग इस संपत्ति को नीलाम अथवा विक्रय करें तो दूर दराज बैठे हुए लोग भी बोली में सम्मिलित हो सके। शत्रु संपत्ति विभाग के अधिकारी और राजस्व विभाग के कर्मचारियों ने जौहर यूनिवर्सिटी परिसर में दिनभर नापतोल किया यह कार्रवाई आधुनिक यंत्र डीजीपीएस यानी डिफरेंशियल ग्लोबल पोजीशन सिस्टम मशीन द्वारा की जा रही है। राजस्व विभाग की टीम में नायब तहसीलदार शत्रु संपत्ति के पर्यवेक्षक और कई लेखपाल और कानूनगो शामिल थे। लगभग तीन से चार घंटे राजस्व विभाग की टीम आजम खान की जौहर यूनिवर्सिटी में मौजूद रही।

शत्रु संपत्ति विभाग के पर्यवेक्षक प्रशांत कुमार ने ऑफ कैमरा मीडिया को बताया कि यह आधुनिक मशीन डी जी पी एस डिफरेंशियल ग्लोबल पोजीशन सिस्टम मशीन द्वारा शत्रु संपत्ति की जांच की जा रही है लगभग 14 हेक्टेयर शत्रु सम्पत्ति है जिसमें कई गाटे है और गाटा संख्या 1436 का रकबा सबसे बड़ा है।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

दिल्ली चुनाव में एआईएमआईएम की एंट्री दंगों के आरोपी ताहिर को मिला टिकट

» ओवैसी ने ताहिर हुसैन की उम्मीदवारी का औपचारिक रूप से किया ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनावों में असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम की एंट्री हुई है। वो मुस्तफाबाद विधानसभा से दिल्ली दंगों के आरोपी ताहिर हुसैन को उम्मीदवार बनाई है। ताहिर हुसैन के परिवार की आज (मंगलवार) असदुद्दीन ओवैसी से मुलाकात हुई।

असदुद्दीन ओवैसी ने ताहिर हुसैन की उम्मीदवारी की औपचारिक रूप से ऐलान किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, एमसीडी पार्षद ताहिर हुसैन एआईएमआईएम में शामिल हुए। वह आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव में मुस्तफाबाद विधानसभा क्षेत्र से हमारे उम्मीदवार होंगे। उनके परिवार के सदस्यों और समर्थकों ने आज मुझसे मुलाकात की और पार्टी में शामिल हुए। ताहिर हुसैन फरवरी 2020 में दिल्ली में हुए दंगों के आरोपी हैं। वह आम आदमी पार्टी से निगम पार्षद का चुनाव जीत चुके हैं। हालांकि दंगों में नाम आने के बाद पार्टी ने उन्हें निष्कासित कर दिया था। ताहिर हुसैन वार्ड नंबर 59, नेहरू विहार से पार्षद रह चुके हैं, जो पूर्वी दिल्ली में मुस्तफाबाद विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उन्होंने 2017 में नगर निगम चुनाव जीता था। ताहिर 2017 के नगर निगम चुनावों में वार्ड में सबसे अमीर उम्मीदवार थे।

अन्नदाताओं से सरकार क्यों हो रही खिन्न!

11 सालों से अपनी मांगों पर अड़े पर सत्ताधीश मौन

» एनडीए सरकार की नीतियों के खिलाफ हैं किसान

» विपक्ष ने भी संसद में उठाया है मामला

» कांग्रेस समेत सभी दल किसानों के साथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जबसे मोदी सरकार बनी है आंदोलन व प्रदर्शन होना आम बात हो गई है। बीजेपी सरकार की नीतियों को लेकर नौजवान, जवान व किसान परेशान हैं। एनडीए सरकार प्रथम व द्वितीय कार्यकाल में अपनी मांगों को लेकर सड़क पर उतरे किसान तीसरे कार्यकाल में भी सड़क पर हैं। एनडीए सरकार के 11 साल बीतने को है पर किसान आज भी परेशान हैं। ऐसा नहीं कि किसानों की मांग को लेकर सड़क की पटे हुए उनकी समस्याओं को संसद तक में भी उठाए गए पर सरकार सिर्फ आश्वासन देकर अपने कर्तव्यों की इतीश्री कर देती है।

अब तो मामले कोर्ट कचहरी में भी पहुंचने लगे हैं। पर चर्चा अब भी यही हो रही हैं कि अन्नदाताओं की समस्याओं का समाधान आखिर कब होगा? क्या उनकी मांगे भविष्य में कभी पूरी हो भी पाएंगी या नहीं? केंद्र में सरकार चाहे कांग्रेस की हो या भाजपा की, हर दौर में यही सब कुछ देखने को मिलता है। कमोबेस, सरकारों का रवैया सदैव एक जैसा ही रहता है। इसलिए एकाएक किसी सरकार को दोषी ठहराना किसी टिप्पणीकार के लिए बेईमानी सा होता है। किसान आंदोलनों से जो समस्याएं उपजती हैं, उसका खामियाजा सिर्फ और सिर्फ आमजन ही भुगतते हैं। समस्याएं किस कदर पनपती हैं इस ओर शायद किसी का भी ध्यान नहीं जाता। मरीज, छात्र, राहगीर, दैनिक कर्मी तो बेहाल होते ही हैं, रोजमर्रा के क्रियाकलाप भी रुक जाते हैं। दो दिसंबर को भी यही हुआ, जब किसान उत्तर प्रदेश के एक छोर से चले, तो सड़कों पर दौड़ने वाले तेज वाहनों के पहिए थम गए। अपनी विभिन्न मांगों को लेकर किसान संगठनों ने एक बार फिर दिल्ली पर चढ़ाई करने का प्रयास कर रहे हैं। हालांकि ऐसा करने से उन्हें बलपूर्वक बॉर्डरों पर ही रोका गया है। पर, हालात दिल्ली-एनसीआर के एक बार फिर बिगड़ते दिखाई पड़ने लगे हैं। इस दफे भी किसानों के तेवर उग्र दिख रहे हैं। अन्नदाता लंबा आंदोलन करने के मूड में दिखाई पड़ते हैं। इतना तय है, अगर उनकी समस्याओं का समाधान समय रहते नहीं हुआ, तो हालात पिछले किसान आंदोलन जैसे बनने में वक्त नहीं लगेगा। किसान केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार को बीते एक महीने से अल्टीमेटम दे रहे थे कि उनकी मांगे मानी जाएं, उनसे बात करे कोई जिम्मेदार व्यक्ति, जिससे दोनों पक्ष बैठकर कोई हल निकाल सकें। लेकिन उनकी बातों को हुकूमती स्तर पर एक बार भी अनसुना और अनदेखा किया गया। दिल्ली पहुंचने के लिए गौतमबुद्ध नगर से करीब 50,000 से अधिक किसान सोमवार सुबह यानी दो तारीख को नोएडा महामाया फ्लाईओवर के पास एकत्रित हुए, फिर उन्होंने दिल्ली कूच का प्लान किया, हालांकि तत्काल रूप से तो पुलिस ने उनकी योजना को विफल कर दिया है। लेकिन किसान बॉर्डर पर ही डटे हुए हैं, वह किसी भी सूरत में दिल्ली पहुंचना चाहते हैं।

राजनीति भी चरम पर

किसान मूवमेंट शुरू होने के कुछ घंटों बाद ही राजनीति भी आरंभ हो गई। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने अपना समर्थन दे दिया। कांग्रेस ने कहा दिल्ली बॉर्डर पर बैरिकेडिंग, वाटर कैनन, दंगा नियंत्रण गाड़ियां और अमित शाह की पूरी पुलिस तैनात की गई। ऐसा प्रतीत होता है जैसे की उनको किसी आंतकवादी को रोकना या पकडना हो किसान भूमि अधिग्रहण का उचित मुआवजा और फसल के सही दाम की मांग लेकर दिल्ली आकर सोती सरकार को जगाना चाहते हैं इसमें बुरा क्या है? वहीं, आम आदमी पार्टी की ओर से बयान आया जिसमें कहा गया कि राष्ट्र की राजधानी किसी की बपौती तो है नहीं? फिर किसान क्यों नहीं आ सकते? प्रधानमंत्री पर भी उन्होंने हमला किया। बोले, किसानों पर बर्बरता के नए आयाम रच रहे हैं प्रधानमंत्री। उनके दिल में अन्नदाताओं के लिए रत्ती भर सम्मान नहीं है। कांग्रेस का मानना है कि किसान अपनी जायज मांगों को लेकर दिल्ली आना चाहते हैं, उन्हें आने देना चाहिए, उनपर वाटर कैनन का प्रयोग करना गलत है।

किसानों के प्रदर्शन का मामला सुप्रीम कोर्ट भी पहुंचा

सुप्रीम कोर्ट में किसानों के प्रदर्शन की वजह से बाधित राजमार्गों को खोलने की मांग को लेकर एक याचिका दायर की गई है। शीर्ष अदालत की वेबसाइट पर अपलोड की गई 9 दिसंबर की वाद सूची के मुताबिक, जस्टिस सूर्यकांत के नेतृत्व वाली पीठ याचिका पर सुनवाई करेगी। याचिका में कोर्ट से केंद्र और अन्य जिम्मेदारों को पंजाब में किसानों के प्रदर्शन की वजह से अवरुद्ध राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों को तुरंत खोलने का निर्देश दिए जाने की अपील की गई है। दरअसल, संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा के बैनर तले दिल्ली कूच को सुरक्षाबलों की ओर से रोके जाने के बाद किसान 13 फरवरी से पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू और खनौरी बॉर्डर पर डेरा डाले हुए हैं। पंजाब निवासी एक सामाजिक कार्यकर्ता की ओर से शीर्ष अदालत में याचिका दायर की गई है। याचिका में कहा गया है कि किसानों और किसान संगठनों को दिल्ली जाने से रोका जा रहा है। इसके बाद उन्होंने पंजाब में पूरे राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों को अनिश्चितकाल के लिए अवरुद्ध कर दिया है। ऐसे में किसानों के प्रदर्शन पर प्रतिबंध हटाने और यह सुनिश्चित करने के लिए केंद्र और अन्य को निर्देश दिया जाए कि आंदोलनकारी किसानों की ओर से राष्ट्रीय राजमार्गों और रेलवे पटरियों को अवरुद्ध न किया जाए। याचिका में कहा गया है कि पंजाब और पड़ोसी राज्यों के लोगों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। वे आपात चिकित्सा स्थिति में समय समय पर अस्पतालों तक नहीं पहुंच पा रहे हैं, क्योंकि पूरे पंजाब राज्य में राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों पर एंबुलेंस को भी रोका जा रहा है।

दिल्ली मार्च का प्लान अचानक बना

किसानों ने दिल्ली मार्च का प्लान अचानक से ही बनाया। पहले की प्री-प्लान नहीं थी। क्योंकि किसान अपनी विभिन्न मांगो को लेकर नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना प्राधिकरण पर पिछले कुछ दिनों से धरनागत थे। उनकी प्रमुख मांगे हैं, उन्हें जमीन के बदले 10 पर्सेंट निर्मित प्लॉट और 64 पर्सेंट बढ़ा हुआ जमीन का शेष मुआवजा दिया जाए। साथ ही जितने किसान जमीन छिन जाने से भूमिहीन हुए हैं, उनके परिवार के बच्चों को केंद्र सरकार और राज्य सरकार कोई न कोई रोजगार जैसी वैकप्लिक व्यवस्थाएं की जाएं, इसके अलावा एमएसपी गारंटी कानून लागू करें। फसलों की कीमतें डबर हों, खाद, बीज व कीटनाशक दवाईयों के रेट कम किए जाएं जैसी पुरानी मांगे भी उनकी बरकरार हैं। इस वक्त मंडियों में धान की खरीद में जो घटतौली हो रही है उसे तुरंत रोका जाए। ये मांगे ऐसी जिसे शायद ही सरकारें मांने।

बड़ा रूप ले सकता है किसान मूवमेंट

प्रतीत ऐसा होता है कि ये किसान मूवमेंट भी बडा रूप ले सकता है। अभी तक गनीमत ये समझी जाए, इस मोर्चे में सिर्फ दर्जन भर ही किसान संगठन शामिल हुए हैं। हालांकि बाहर से करीब सौ से ज्यादा किसान संगठनों का समर्थन प्राप्त है। मोर्चे को रोकने को अगर कोई जल्द विकल्प नहीं निकाला गया, तो अन्य किसान संगठन भी कूदने में देर नहीं करेंगे। हांलाकि सोमवार को किसान मोर्चे को देखते हुए नोएडा ट्रैफिक पुलिस और दिल्ली पुलिस की ओर से एडवाइजरी की गई जिसमें कालिंदी कुंज बॉर्डर, यमुना एक्सप्रेस-वे और डीएनडी बॉर्डर से बचने की लोगों को सलाह दी गई, क्योंकि इन जगहों पर मोर्चे का असर व्यापक रूप से देखने को मिला। लोग अनचाई परेशानी से जूझते दिखाई पड़े स्कूली बच्चों भी जाम में फंसे रहे, एमबूलेंस भी नहीं निकल पाई। नौकरीपेशा समय से अपने कार्यालयों में नहीं पहुंच पाए। ये हालात ऐसे ही बने रहेंगे, जब तक ये मूवमेंट चलता रहेगा।

किसानों का पूरा ख्याल रखेगी सरकार : शिवराज

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राज्यसभा में आश्वासन दिया कि नरेंद्र मोदी सरकार सभी कृषि उपज को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदने के लिए प्रतिबद्ध है। कृषि मंत्री का बयान उस दिन आया जब किसानों ने मांगों के एक चार्टर के साथ दिल्ली तक मार्च किया, जिसमें फसलों के एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी शामिल थी। चौहान ने कहा कि मैं आपके माध्यम से सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि किसानों की सभी उपज न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी जाएगी। यह मोदी सरकार है और मोदी की गारंटी को पूरा करने की गारंटी है। कृषि मंत्री ने कहा कि एमएसपी तब दिया जाता है जब कोई फसल एमएसपी से कम दाम पर बेची जाती है। मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि किसानों का कल्याण हमारी प्रतिबद्धता है। हमने एमएसपी बढ़ाने और एमएसपी पर फसल खरीदने का भी काम किया है। मोदी सरकार की नीतियों का हवाला देते हुए, चौहान ने कहा कि 2019 के बाद से, एमएसपी की गणना उत्पादन लागत पर 50 प्रतिशत लाभ को शामिल करने के लिए की गई है, जिससे किसानों को लाभ होगा। उन्होंने इसकी तुलना कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकारों से की और आरोप लगाया कि उन्होंने किसानों की मांगों को नजरअंदाज किया। भाजपा नेता ने पूर्व की यूपीए सरकार पर वार करते हुए कहा कि जब दूसरे पक्ष के हमारे मित्र सत्ता में थे, तो उन्होंने रिकॉर्ड पर कहा था कि वे एम एस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को स्वीकार नहीं कर सकते, खासकर उपज की लागत से 50 प्रतिशत अधिक देने पर। मेरे पास रिकॉर्ड है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि कांग्रेस कभी किसानों का सम्मान नहीं किया और लाभकारी कीमतों पर कभी गंभीरता से विचार नहीं किया। लेकिन दूसरी ओर, हम पिछले तीन वर्षों से धान, गेहूं, ज्वार और सोयाबीन जैसी फसलों के लिए उत्पादन लागत से 50 प्रतिशत अधिक दे रहे हैं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

फडणवीस पर अच्छी सरकार देने का होगा दबाव!

फडणवीस के सामने गठबंधन सरकार को स्थिर रखने और आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करने की दोहरी चुनौती है। चुनावों में महायुति और उसमें भी बीजेपी को जैसा जनादेश मिला था, उसके बाद इस सवाल पर इतनी माथापच्ची होनी नहीं चाहिए थी, लेकिन पिछले वर्षों में प्रदेश की राजनीति में जिस तरह के मोड़ आए हैं, उन्हें देखते हुए आखिरी पलों तक कुछ भी हो जाने का सस्पेंस बना रहा।

देवेंद्र फडणवीस की सरकार ने विधान सभा में बहुमत हासिल कर लिया है। उससे पहले उन्होंने 5 दिसंबर को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। यह उनका दूसरा कार्यकाल है। भाजपा ही नहीं देवेंद्र फडणवीस पर भी अब दबाव है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चुनावों के दौरान जो भाजपा व उसके सहयोगियों ने जनता से वादे किए है उन्हें भी पूरा करने में उन्हें दरिया दिली दिखानी होगी। वहीं गुड गवर्नेंस देने के लिए उनसे उम्मीदें हैं। 2014 से 2019 तक मुख्यमंत्री रहने के बाद, उन्होंने उपमुख्यमंत्री के रूप में भी कार्य किया। फडणवीस के सामने गठबंधन सरकार को स्थिर रखने और आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में अच्छा प्रदर्शन करने की दोहरी चुनौती है। चुनावों में महायुति और उसमें भी बीजेपी को जैसा जनादेश मिला था, उसके बाद इस सवाल पर इतनी माथापच्ची होनी नहीं चाहिए थी, लेकिन पिछले वर्षों में प्रदेश की राजनीति में जिस तरह के मोड़ आए हैं, उन्हें देखते हुए आखिरी पलों तक कुछ भी हो जाने का सस्पेंस बना रहा।

अब यह सवाल बना हुआ है कि महायुति सरकार की नई पारी पिछली पारी जैसी सहजता और स्थिरता दिखा पाएगी या नहीं तो उसके पीछे प्रदेश राजनीति के हालिया उतार-चढ़ाव ही हैं। दो पुरानी और सुगठित राजनीतिक पार्टियों में हुई असाधारण तोड़फोड़ के परिणास्वरूप बनी महायुति ने हालांकि 2024 विधानसभा चुनावों में अपनी सार्थकता सिद्ध कर दी है और इसलिए अब इसे किसी भी रूप में कृत्रिम गठबंधन नहीं कहा जा सकता, लेकिन राजनीति में कुछ भी स्थायी नहीं होता। जाहिर है, नए मुख्यमंत्री और बीजपी नेतृत्व को सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने और किसी भी असंतोष से बचने पर खास ध्यान देना होगा। प्रदेश राजनीति की यह खास स्थिति जहां सहयोगी दलों की आकांक्षाओं का ध्यान रखने और उन्हें यथासंभव संतुष्ट रखने की जरूरत को रेखांकित करती है वहीं आगामी स्थानीय निकाय चुनावों में महायुति से जुड़े दलों पर बेहतर प्रदर्शन की जिम्मेदारी भी बढ़ा देती है। हालांकि पहली चुनौती मंत्रिमंडल में विभागों के बंटवारे को संतोषजनक ढंग से निपटाने की है। साफ है कि विशाल बहुमत वाली इस सरकार के मुखिया के तौर पर देवेंद्र फडणवीस की यह पारी किसी भी रूप में कम चुनौतीपूर्ण नहीं साबित होने वाली। देखना होगा कि महाराष्ट्र को राजनीतिक स्थिरता और विकास के नए दौर में ले जाने की जिम्मेदारी वह किस हद तक पूरी कर पाते हैं। साथ ही, लोगों ने उनकी पार्टी और सहयोगी दलों पर जो भरोसा जताया है, महायुति सरकार उनकी उम्मीदें पूरी कर पाती है?

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत पर अपेक्षित कूटनीतिक संयम

ज्योति मल्होत्रा

विदेश मामलों पर सलाह करने के वास्ते विदेश मंत्रालय के सचिव विक्रम मिसरी का बांग्लादेश की यात्रा पर जाना सही वक्त पर है। बांग्लादेश द्वारा इस्कॉन से जुड़े हिंदू साधु चिन्मय कृष्ण दास को कथित देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार करना और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की विवादित टिप्पणियों के परिप्रेक्ष्य में, जब वे मुगल सुल्तान बाबर द्वारा अयोध्या, संभल और आज के बांग्लादेश में मंदिरों को तोड़ने के पीछे की वजह 'एक ही डीएनए' होना ठहरा रहे हैं, यह कहना उचित होगा कि एक-दूसरे के सांप्रदायिक उन्माद का पोषण करने वाले कीटाणु भारत और बांग्लादेश, दोनों जगह, कुछ हिस्सों में जीवित और अच्छे-खासे मौजूद हैं। आदित्यनाथ की टिप्पणी जरा भी अनोखी नहीं है। आरएसएस ने हाल ही में भारत की सरकार से आह्वान किया था कि वह बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचारों को रुकवाए, जबकि पश्चिम बंगाल के भाजपा नेता सुवेंदु अधिकारी ने तो यहां तक धमकी दे डाली कि यदि मुहम्मद यूनुस की सरकार हिंदुओं पर हमला करना बंद नहीं करती है तो व्यापारिक प्रतिबंध लगा दिए जाएं।

ऐसी टिप्पणी करने वाले आदित्यनाथ भाजपा के पहले बड़े नेता नहीं हैं। साल 2018 में, तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष और वर्तमान गृह मंत्री अमित शाह ने भारत में बांग्लादेशी प्रवासियों को 'दीमक' ठहराया था और वादा किया था कि उनमें से प्रत्येक का नाम मतदाता सूची से हटा दिया जाएगा। यह बात अलग है कि खुद असम सरकार ने अगस्त माह में स्वीकार किया है कि 1971 और 2014 के बीच असम में रह रहे 'विदेशियों' में 43 प्रतिशत (20,613/47,928) वास्तव में हिंदू हैं। शाह की अकूटनीतिक टिप्पणी शायद पूरी तरह से दीर्घकालीन ध्येय की प्राप्ति के वास्ते थी और यह प्रमाण है रणनीतिक असंवेदनशीलता के साथ हिंदुत्व की राजनीति के अस्वस्थ घालमेल का, खासकर जब मामला भारत के सबसे महत्वपूर्ण पड़ोस का हो।

उस समय, विदेश मंत्रालय ने अपनी चुप्पी साधे रखी, लेकिन तत्कालीन बांग्लादेशी प्रधान मंत्री शेख हसीना को यह समझाने में बहुत मशक्कत करनी पड़ी कि उन्हें किसी राजनेता की टिप्पणियों को व्यक्तिगत रूप से नहीं लेना चाहिए। उस समय, प्रधानमंत्री मोदी अपने पूर्वी पड़ोसियों के साथ

भारत के संबंध सुधारने में पूरी तरह से जुटे हुए थे- और शाह की टिप्पणियों ने इसे करारा झटका दिया। मोदी भली भांति समझते हैं कि किसी अन्य राष्ट्र के मुकाबले बांग्लादेश निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण है, इतना कि उसे किसी भी समय हल्के में नहीं लिया जा सकता। यही कारण है कि मिसरी की ढाका यात्रा इतनी महत्वपूर्ण बन गई है। अगस्त की शुरुआत में, जब से हसीना जान बचाकर दिल्ली पहुंची हैं, तब से द्विपक्षीय संबंधों में गिरावट आई है। कई मुद्दों पर दोनों मुल्कों में ठनी हुई है, जिसमें एक यह भी शामिल है कि तथाकथित क्रांति को हिंसा के चरम पर क्यों पहुंचने दिया गया, जिसकी नाटकीय परिणति हसीना के फ्लाइट लेकर सुरक्षित देश से बाहर निकलने के रूप में हुई। उधर, बांग्लादेश का मानना है कि भारत जानबूझकर देश की अधोगति में हसीना की प्रमुख भूमिका को समझने से इंकार कर रहा है, इधर भारत यह समझने में असमर्थ है कि बांग्लादेश आज जानबूझकर मुजीब-उर-रहमान जैसी महान शख्सियत की स्मृति को क्यों मिटाना चाहता है और उन्हें इतिहास के अपमानजनक कूड़ेदान के हवाले करने में क्यों लगा है। बेशक, समस्या कहीं अधिक जटिल है। इस मामले में जब बांग्लादेश द्वारा आदित्यनाथ और शाह को सत्तारूढ़ पार्टी के प्रवक्ता के रूप में देखा जाए, और जब भारत सरकार सार्वजनिक रूप से इनकी निंदा करने से इनकार कर दे या निजी तौर पर उन्हें ऐसे बयान देने से परहेज करने के लिए न कहे, तो रार बढ़नी स्वाभाविक है और अकसर खुद-ब-खुद यह और गहरी होती जाती है। बदतर यह कि भारतीय राजनेता अपने बांग्लादेशी समकक्षों पर वही करने का आरोप लगा रहे हैं जो वे खुद अक्सर अपने देश में करते हैं - उदाहरण के लिए, आदित्यनाथ के 'बुलडोजर न्याय' का मतलब अधिकांशत: यह निकलता है कि हिंदुओं के घरों की तुलना में मुसलमानों के मकानों को ज्यादा अनुपात में ढहाना - या जब भारतीय राजनेता खुलेआम शेष विवादित पूजा स्थलों की तथाकथित 'वापसी' का आह्वान करते हैं, उदाहरणार्थ, वाराणसी और मथुरा में, भले ही यह करना पूजा स्थल अधिनियम, 1991 का उल्लंघन हो, ऐसे काम बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों में सांप्रदायिक राजनीति को मंजूरी देने जैसे हैं।

धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के तौर पर भारत और बाकी पड़ोसी मुल्कों के बीच का अंतर दशकों से स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था- वास्तव में, पास-पड़ोस भी अक्सर भारत की लोकतांत्रिक संवेदनशीलता को एक आदर्श के रूप में लेता रहा है।

रोजगार आंकड़ों के पीछे छिपे अंधेरे की हो पड़ताल

देश में भूख मिटाने के दावे किए जाते हैं, लेकिन दुनिया के हंगर इंडेक्स में हमारा दर्जा अभी भी निचले पायदान पर है। सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। लेकिन रोजगार के नाम पर उनके सामने केवल अनुकंपों का ही बोझ लादा जाता है। लेकिन रोजगार की गारंटी उनके लिए अनुपलब्ध रहती है। आज छात्रों को जो शिक्षा शिक्षण संस्थानों से प्राप्त होती है, वह आज के डिजिटल और कृत्रिम मेधा के युग में पूरी तरह से असंबद्ध प्रतीत होती है।

सुरेश सेठ

आम लोग जिन मूल समस्याओं से दशकों से जूझ रहे हैं, उनके समाधान का संकल्प नेताओं द्वारा बार-बार लिया जाता है। बावजूद इसके, समस्याएं जस की तस बनी हुई हैं। भ्रष्टाचार को शून्य स्तर पर लाने की बात केंद्र हो या राज्य सरकार, इसे अपनी प्राथमिकता बताता है। फिर भी, भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के प्रयास विफल साबित हुए हैं। देश में भूख मिटाने के दावे किए जाते हैं, लेकिन दुनिया के हंगर इंडेक्स में हमारा दर्जा अभी भी निचले पायदान पर है। सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। लेकिन रोजगार के नाम पर उनके सामने केवल अनुकंपों का ही बोझ लादा जाता है। लेकिन रोजगार की गारंटी उनके लिए अनुपलब्ध रहती है। आज छात्रों को जो शिक्षा शिक्षण संस्थानों से प्राप्त होती है, वह आज के डिजिटल और कृत्रिम मेधा के युग में पूरी तरह से असंबद्ध प्रतीत होती है।

उनकी डिग्रियां नई तकनीक और डिजिटल श्रेणियों के सामने कोई मूल्य नहीं रखतीं। जहां कृत्रिम मेधा और इंटरनेट जैसी नई तकनीकों के कारण नौकरियां उत्पन्न हो रही हैं, वहां हमारे नौजवानों के पास उचित शिक्षण और प्रशिक्षण की कमी है। इसके परिणामस्वरूप, छोटी नौकरियों के लिए भी हजारों पढ़े-लिखे युवा अपनी पुरानी डिग्रियों को बेकार पाते हैं। नौकरी के लिए भेजे गए उनके आवेदन पत्रों का कोई सार्थक उत्तर नहीं मिलता। दूसरी ओर, बदलती दुनिया में रोबोट तकनीक, इंटरनेट की नई उड़ान और कृत्रिम मेधा का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। लेकिन इन बदलावों के लिए हमारे नौजवान योग्य नहीं हैं, क्योंकि उन्हें इस नई तकनीकी दुनिया के अनुकूल शिक्षण और प्रशिक्षण नहीं दिया गया। संसद के शीतकालीन सत्र की परिणति भी पूर्ववर्ती सत्रों जैसी ही प्रतीत होती है-विपक्ष के हंगामे और कोलाहल के बीच उनकी मांगों को नजरअंदाज कर काम न चलने देने के आरोप लग रहे हैं। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच ऐसा द्वंद्व युद्ध, जिसमें कुछ भी सार्थक नहीं होता। हर सत्र में यह स्थिति दोहराई जाती है।

कोई यह सवाल नहीं उठाता कि बेरोजगारी को समाप्त किया जाए, भ्रष्टाचार पर लगाम लगाई जाए या लालफीताशाही और दफ्तरी जटिलताओं से आम आदमी को राहत दी जाए। आम आदमी वैश्विक खुशहाली के पायदान पर बहुत निचले दर्जे में दर्ज है। हालांकि, सरकारी आंकड़े इसका उल्टा बताते हैं। सरकारी दावे हैं कि बेरोजगारी की दर लगातार कम हो रही है। लेकिन ये आंकड़े वास्तविकता को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। सरकारों द्वारा निर्धारित रोजगार के मानकों से वास्तविक बेरोजगारी के आंकड़े प्रभावित होते हैं।

यही वजह है कि नौकरी की तलाश के लिए कई बार सरकारी रियायतें और अनुकंपा योजनाओं का सहारा लिया जाता है। इसका परिणाम यह हुआ है कि धीरे-धीरे देश में शॉर्टकट और मुफ्तखोरी की संस्कृति पनपने लगी है। सरकार का दावा है कि रोजगार कार्यालयों की खिड़कियों पर नौकरी मांगने वालों की संख्या घट गई है, जिसका अर्थ यह है कि बेरोजगारी की समस्या किसी हद तक कम हुई है। नौकरी मांगने वालों की संख्या भले ही घट गई हो, लेकिन रियायत बांटने वाले केंद्रों पर उनकी संख्या बढ़ गई है। वहां इनकी कतारें लगातार लंबी होती जा रही हैं। चुनावों के दौरान सत्तारूढ़ दल हो या विपक्ष, उनके घोषणापत्रों में सबसे बड़ा मुद्दा यह होता है कि कौन अधिक से अधिक अनुकंपा योजनाएं ला सकता है। बेरोजागरी के आंकड़ों के बीच पूरे देश में कई सरकारी पद खाली पड़े हैं। इन पदों को भर्ती परीक्षाओं के माध्यम से भरा जाता है। परंतु भर्ती परीक्षाओं की स्थिति भी चिंता का विषय है।

पेपर लीक और परीक्षार्थियों की शिकायतें संकेत करती हैं कि योग्यता का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता। आंकड़े बताते हैं कि पिछले छह वर्षों में 18 राज्यों में 60 से अधिक भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक हुए। अब देश में गिग अर्थव्यवस्था का भी सूत्रपात हो रहा है। इसमें किसी विशेष कार्य के लिए अस्थायी कर्मचारियों की भर्ती की जाती है, जिन्हें कुछ समय बाद नौकरी से निकाल दिया जाता है। वहीं वर्क फ्रॉम होम स्वरोजगार को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। हालांकि, यह भी सच है कि ऐसे स्वरोजगार करने वाले लोगों की संख्या सीमित है। निजी क्षेत्र में नौकरी करने वाले कर्मचारी वेतन और अन्य सुविधाओं के मामले में बहुत दयनीय स्थिति में हैं। देश की आधी महिलाएं घरेलू कार्यों में लगी हुई हैं, और कई नौजवान पुश्तैनी खेती में ही अपना समय बिता रहे हैं। लेकिन उन्हें कोई अतिरिक्त वेतन नहीं मिलता। देश में करीब 58 प्रतिशत लोग स्वरोजगार या छुपे बेरोजगार हैं, जबकि नौकरीपेशा केवल 22 प्रतिशत हैं। इस प्रकार, देश में बेरोजगारी की समस्या का सही समझना और समाधान करना बहुत कठिन है। आंकड़ों की बाजीगरी समस्या का समाधान नहीं होगा। आंकड़ों के पीछे छिपे अंधेरे की पड़ताल हो।

घुटनों का दर्द

इन मसाजों से मिलेगी राहत

सर्दियों का मौसम आ गया है। ठंडक शुरू होते ही कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं की संभावना बढ़ जाती है। सर्दियों में खांसी-जुकाम आम समस्या है,लेकिन कई लोगों को जोड़ों में दर्द की शिकायत हो जाती है। बुजुर्ग ही नहीं, कम उम्र वाले लोगों को भी घुटनों में दर्द होने लगता है। इसका कारण है कि ठंड बढ़ने से ब्लड सर्कुलेशन कम हो जाता है, जिससे जोड़ों में ब्लड वेसेल्स सिकुड़ जाती हैं। इस मौसम में कम शारीरिक गतिविधियों के कारण हड्डियों के बीच मूवमेंट कम हो जाता है। वहीं विटामिन डी की कमी भी हो जाती है, जिससे शरीर अकड़ने लगता है और जोड़ों में दर्द होने लगता है। जोड़ों में दर्द और स्टिफनेस को दूर करने के लिए मसाज असरदार हो सकता है लेकिन किसी भी मसाज के भरपूर लाभ के लिए आपको सही तरीका अपनाना होगा। जोड़ों के दर्द से राहत पाने के लिए इन मसाजों को अपना सकते हैं।

सरसों का तेल

कड़वा तेल या सरसों का तेल घुटने के दर्द को कम करने के लिए एक रामबाण तरीका है. इसके लिए सरसों के तेल में दो से चार लहसुन की कलियों को कुचल कर डाल दें और इसे अच्छी तरह से गर्म कर लें. जब तेल हल्का गुनगुना रह जाए तो इससे अपने घुटनों की मालिश करें। सरसों के तेल में एंटी ऑक्सीडेंट, एंटी इंफ्लेमेटरी, ओमेगा 3 फैटी एसिड जैसे गुण पाए जाते हैं, जो घुटने के दर्द को छूमंतर कर सकते हैं।

ऐसे करें मालिश

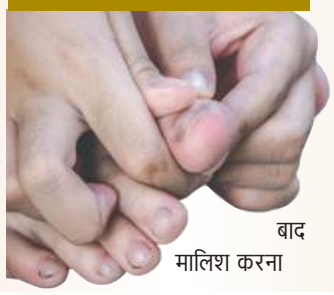

बाद मालिश करना

ध्यान रखें कि घुटनों के आगे पीछे सर्कुलर मोशन में मसाज करें। अंगूठे की मदद से इस मसाज को करने से नी कैप चिकनी और लचीली होती है। साथ ही स्टिफनेस दूर होती है। घुटनों के ऊपर ही नहीं नीचे वाली हड्डियों और मसल्स की मालिश जरूर करनी चाहिए। उंगलियों की मदद से ठीक घुटनों के नीचे वाले हिस्से पर दबाव देते हुए मालिश करें। तलवों और उंगलियों की मसाज करना न भूलें। अंगूठे और उंगलियों में तेल लगाकर रगड़ते हुए मालिश करें। हथेलियों पर तेल रखें और दोनों हाथों पर अच्छी तरह से रगड़ने के बाद घुटनों की मसाज के लिए मालिश साइड्स से शुरू करें। दोनों हाथों को घुटनों की साइड पर रखकर रब करें। इससे ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है और ज्वाइंट्स पेन में राहत मिलती है। घुटनों के नीचे से नापकर एक हथेली नीचे काल्फ वाली मसल्स पर अंगूठे से दबाव डालें और फिर प्रेस करते हुए घुटनों तक आएं और फिर नीचे एड़ी तक मसाज करें।

आइस पैक

प्रभावित घुटने पर हर 2-3 घंटे में लगभग 15-20 मिनट के लिए आइस पैक या ठंडा सेक लगाएं. ठंडा तापमान दर्द और सूजन को कम करने में मदद कर सकता है।

हीट थेरेपी

घुटने के आसपास ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ावा देने और मांसपेशियों को आराम देने के लिए आप हीट थेरेपी का उपयोग भी कर सकते हैं। आप हीटिंग पैड लगाएं या गर्म पानी से बाथ लें।

टीबिया एंड पीसीए

केवल घुटनों के ऊपर ही नहीं घुटनों के नीचे वाली हड्डियों और मसल्स पर मसाज जरूरी होती है। उंगलियों की मदद से ठीक घुटने के नीचे वाले हिस्से पर दबाव डालते हुए मसाज करें। ऐसा करने से मसल्स जो खिंच गई हैं और स्टिफ हो गई हैं उन्हें राहत मिलती है।

पटेला सर्किल

हाथों पर तेल लेकर घुटनों के आगे पीछे सर्कुलर मोशन में मसाज करें। अंगूठे की मदद से इस मसाज को करने से नी कैप स्मूद और फ्लैक्सिबल बनती है। जिसकी वजह से हो रही स्टिफनेस दूर होगी।

तिल के तेल से करें मालिश

घुटनों में दर्द है तो रोजाना पांच मिनट मालिश करें। मालिश के लिए दस मिनट तिल के तेल से घुटनों की मसाज कर सकते हैं। ध्यान रखें कि अगर एसिडिटी से परेशान हैं तो नारियल के तेल से मालिश करें। घुटनों या हड्डियों की मालिश के लिए सबसे पहले हथेलियों में तेल रखें। अब दोनों हाथों पर तेल को अच्छे से रगड़ें। फिर मालिश करना शुरू करें। घुटनों की मालिश दोनों साइड से करें। दोनों हाथों को घुटनों के किनारे पर रखकर रगड़ें। ऐसा करने से ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है और जोड़ों में दर्द से राहत मिलती है।

हंसना मना है

रुपेश : पापा मुझे एक लड़की पसंद है, मैं उससे शादी करना चाहता हूं.. पापा: क्या वो भी तुझे पसन्द करती है? रुपेश : हां जी हां.. पापा: जिस लड़की की पसन्द ऐसी हो, मैं उसे अपनी बहू नहीं बना सकता।

सरदार से किसी ने पुछा: क्यों टेंशन मे हो? सरदार: यार एक दोस्त को प्लास्टिक सर्जरी के लिए 2 लाख दिए, अब साले को पहचान नहीं पा रहा हूं।

संता अपनी बीमारी की वजह से डॉक्टर के पास गया, डॉक्टर: आपकी बीमारी की सही वजह मेरी समझ में नहीं आ रही, हो सकता है दारु पीने की वजह से ऐसा हो रहा हो, संता: कोई बात नहीं डॉक्टर साहब, जब आपकी उतर जाएगी तो मैं दोबारा आ जाऊंगा।

पापा और 15 साल का बेटा एक होटल में गए, पापा- वेटर एक बियर और एक आईसक्रीम लाओ, बेटा- आईसक्रीम क्यों पापा, आप भी बियर लीजिये ना, दे.. चप्पल.. पे.. चप्पल!

एक औरत अपनी पड़ोसन को बता रही थी तुझे पता है, 20 साल तक मेरी कोई औलाद नहीं हुई, पड़ोसन हैरानी से : तो फिर तूने क्या किया? औरत : फिर मैं 21 साल की हुई तो मेरे पापा ने मेरी शादी कर दी, फिर जा के मुन्ना हुआ। पड़ोसन खड़े खड़े बेहोश हो गयी।

कहानी | ब्राह्मण का सपना

एक वक्त की बात है, किसी शहर में एक कंजूस ब्राह्मण रहता था। एक दिन उसे भिक्षा में जो सत्तू मिला, उसमें से थोड़ा खाकर बाकी का उसने एक मटके में भरकर रख दिया। फिर उसने उस मटके को खूंटी से टांग दिया और पास में ही खाट डालकर सो गया। सोते-सोते वो सपनों की अनोखी दुनिया में खो गया और विचित्र कल्पनाएं करने लगा। वो सोचने लगा कि जब शहर में अकाल पड़ेगा, तो सत्तू का दाम 100 रुपये हो जाएगा। मैं सत्तू बेचकर बकरियां खरीद लूंगा। बाद में इन बकरियों को बेचकर गाय खरीदूंगा। इसके बाद भैंस और घोड़े भी खरीद लूंगा। कंजूस ब्राह्मण कल्पनाओं की विचित्र दुनिया में पूरी तरह खो चुका था। उसने सोचा कि घोड़ों को अच्छी कीमत पर बेचकर खूब सारा सोना खरीद लूंगा। फिर सोने को अच्छे दाम पर बेचकर बड़ा-सा घर बनाऊंगा। मेरी संपत्ति को देखकर कोई भी अपनी बेटी की शादी मुझसे करा देगा। शादी के बाद मेरा जो बच्चा होगा, मैं उसका नाम मंगल रखूंगा। फिर जब मेरा बच्चा अपने पैरों पर चलने लगेगा, तो मैं दूर से ही उसे खेलते हुए देखकर आनंद लूंगा। जब बच्चा मुझे परेशान करने लगेगा, तो मैं गुस्से में पत्नी को बोलूंगा और कहूंगा कि तुम बच्चे को ठीक से संभाल भी नहीं सकती हो। अगर वह घर के काम में व्यस्त होगी और मेरी बात का पालन नहीं करेगी, तब मैं गुस्से में उठकर उसके पास जाऊंगा और उसे पैर से ठोकर मारूंगा। ये सारी बातें सोचते-सोचते ब्राह्मण का पैर ऊपर उठता है और सत्तू से भरे मटके में ठोकर मार देता है, जिससे उसका मटका टूट जाता है। इस तरह सत्तू से भरे मटके के साथ ही कंजूस ब्राह्मण का सपना भी चकनाचूर हो जाता है।

कहानी से सीख: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि किसी भी काम को करते वक्त मन में लोभ नहीं आना चाहिए। लोभ का फल कभी भी मीठा नहीं होता है। साथ ही सिर्फ सपने देखने से सफलता नहीं मिलती, इसके लिए मेहनत करना भी जरूरी है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष आज बनते काम बिगड़ सकते हैं। भाइयों से कहासुनी हो सकती है। आय बनी रहेगी। व्यापार ठीक चलेगा। चोट व दुर्घटना से हानि संभव है। जल्दबाजी न करें।

वृषभ कोर्ट व कचहरी में लाभ की स्थिति बनेगी। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। पिछले लंबे समय से रुके कार्य बनेंगे। प्रसन्नता रहेगी। दूसरों से अपेक्षा न करें।

मिथुन भूमि व भवन संबंधित कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। व्यापार अच्छा चलेगा।

कर्क रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। शत्रु परास्त होंगे। व्यापार ठीक चलेगा। निवेश में जल्दबाजी न करें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

सिंह बेवजह दौड़धूप रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कोई शोक समाचार मिल सकता है। अपेक्षित कार्यों में बाधा उत्पन्न हो सकती है। पार्टनरों से मतभेद संभव है।

कन्या सामाजिक कार्य करने का मन बनेगा। मेहनत का फल मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। निवेश शुभ रहेगा। व्यापार में वृद्धि होगी। भाग्य का साथ मिलेगा।

तुला पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। ऐश्वर्य के साधनों पर व्यय होगा। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। निवेश शुभ रहेगा।

वृश्चिक जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। यात्रा लाभदायक रहेगी। नौकरी में प्रमोशन मिल सकता है। रोजगार प्राप्ति होगी।

धनु कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। यात्रा में कोई चीज भूलें नहीं। फालतू खर्च होगा। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। लापरवाही न करें। बनते काम बिगड़ सकते हैं।

मकर डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है। यात्रा लाभदायक रहेगी। किसी बड़ी समस्या से सामना हो सकता है। व्यापार में वृद्धि के योग हैं। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा।

कुम्भ सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। योजना फलीभूत होगी। किसी बड़ी समस्या का हल एकाएक हो सकता है। प्रसन्नता रहेगी। प्रयास अधिक करना पड़ेंगे।

मीन कानूनी सहयोग मिलेगा। लाभ में वृद्धि होगी। रुके कार्यों में गति आएगी। तंत्र-मंत्र में रुचि बढ़ेगी। सत्संग का लाभ मिलेगा। शेयर मार्केट से लाभ होगा।

बॉलीवुड | बॉक्स ऑफिस

पुष्पा 2 ने बाहुबली 2 को पीछे छोड़ कमाए सबसे तेज 500 करोड़

अल्लू अर्जुन ने अपनी फिल्म पुष्पा: द रूल से साबित कर दिया है कि वह असल में फायर हैं। सुकुमार के निर्देशन में बनी इस फिल्म की लागत 500 करोड़ रुपये है। वहीं, आपको जानकर हैरानी होगी कि पुष्पा 2 ने रिलीज के चार दिन में ही फिल्म के बजट से ज्यादा कमाई कर ली है और अब तक की सबसे जल्दी 500 करोड़ रुपये कमाने वाली भारतीय फिल्म बन गई है। अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा: द राइज के सीक्वल पुष्पा 2: द रूल ने 5 दिसंबर को सिनेमाघरों में दस्तक दी। सुकुमार के निर्देशन में बनी इस फिल्म में रश्मिका मंदाना और फहद फासिल ने भी अपनी-अपनी भूमिकाएं दोहराई हैं। वहीं, टिकट विंडो पर इसकी ओपनिंग से ही साफ हो गया कि पुष्पा 2 बॉक्स ऑफिस पर कमाई के कई रिकॉर्ड तोड़ने वाली है। पुष्पा 2 की बात करें तो इसे 12 हजार स्क्रीन पर रिलीज किया गया है। तेलुगु, हिंदी, तमिल, कन्नड़, मलयालम और हिंदी भाषा में रिलीज इस फिल्म ने स्पेशल स्क्रीनिंग में 10.1 करोड़ रुपये की कमाई की। वहीं, इसने भारतीय बॉक्स ऑफिस के टिकट विंडो पर 165 करोड़ रुपये की ओपनिंग ली। इस तरह इसका टोटल 175.1 करोड़ रुपये हो गया। अल्लू अर्जुन की इस फिल्म ने दूसरे दिन भारतीय बॉक्स ऑफिस पर 93.8 करोड़ रुपये की कमाई की। तीसरे दिन कमाई में फिर से उछाल देखने को मिली और इसका कलेक्शन 119.25 करोड़ रुपये रहा। वहीं, फिल्म को चौथे दिन यानी रविवार का पूरा फायदा मिला है। ताजा आंकड़ों की मानें तो पुष्पा 2 ने चौथे दिन 141.5 करोड़ रुपये का कारोबार किया है, जिससे इसका टोटल 529.45 करोड़ रुपये हो गया है। पुष्पा 2 ने कमाई के इस आंकड़े के साथ कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों को पीछे छोड़ दिया है। बाहुबली 2 और केजीएफ चैप्टर 2 को 500 करोड़ रुपये के क्लब में शामिल होने में एक सप्ताह का वक्त लग गया था।

नाना बिल्कुल अलग ही इंसान हैं : अमोल

हाल ही में अमोल पालेकर ने अपने करियर, अपनी आत्मकथा 'व्यू फाइंडर ए मेमॉयर' के बारे में बात की। इस दौरान उन्होंने नाना पाटेकर के बारे में भी दिलचस्प किस्सा साझा किया। साथ ही उनके गुस्से के बारे में भी खुलकर बात की। अमोल पालेकर ने बताया कि उन्होंने अपनी निर्देशित फिल्म 'थोड़ा सा रूमानी हो जाएं' के लिए पहले नाना पाटेकर को रिजेक्ट कर दिया। लेकिन बाद में नाना ने ही फिल्म में मुख्य भूमिका निभाई। आखिर यह सब कैसे मुमकिन हुआ? इस बारे में अमोल पालेकर खुलकर बातचीत की वह कहते हैं, 'मैंने नाना पाटेकर को इसलिए फिल्म में रोल नहीं दिया था क्योंकि फिल्म 'परिंदा' के बाद उनकी इमेज पर्दे पर एंग्री यंग मैन जैसी बन चुकी थी। क्योंकि जब मेरी फिल्म में मुख्य किरदार कविताएं करता है, तो वह बहुत ही कोमल मन का इंसान है। लेकिन नाना पाटेकर नहीं माने। वह बोले कि आप मुझे एक मौका देकर देखिए, मैं आपको साबित कर दूंगा कि यह रोल कर सकता हूं।' अमोल पालेकर आगे कहते हैं, 'नाना पाटेकर एक हफ्ते तक मेरे घर आते रहे, और मेरे साथ खुब लगन से रिहर्सल करते रहे। धीरे-धीरे वह मेरी फिल्म के किरदार में ढलते गए। मैंने महसूस किया कि नाना पाटेकर मेरी फिल्म के किरदार के लिए बिल्कुल सही है। इस तरह से नाना ने फिल्म 'थोड़ा सा रूमानी हो जाएं' में मुख्य किरदार हासिल किया। नाना पाटेकर बॉलीवुड में अपने गुस्से के लिए मशहूर हैं। वह निर्देशकों से झगड़ा भी कर लेते हैं। नाना पाटेकर के गुस्से के बारे में अमोल पालेकर अलग ही बात कहते हैं। वह बताते हैं कि नाना बिल्कुल अलग ही इंसान हैं। मेरे साथ जब उन्होंने फिल्म की तो एक बार भी हमारी बहस नहीं हुई।' अमोल पालेकर ने नाना के अभिनय क्षमता की भी खूब तारीफ की।

बॉलीवुड | मसाला

बेटी अनन्या पांडे के लिए भावुक हुए पिता चंकी पांडे

अभिनय की दुनिया में कदम रखने से पहले, अनन्या पांडे ने पेरिस में प्रतिष्ठित ले बाल देस डेब्यूटेंट्स में भाग लिया था। वह लगभग आठ साल पहले डेब्यूटेंट बॉल और फैशन इवेंट के प्रतिष्ठित कार्पेट पर चली थीं। हाल ही में अनन्या ने उस समय को याद किया जब वह अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल हुई थीं। उनके पिता चंकी पांडे बेटी अनन्या की सफलता को लेकर भावुक हो गए। अनन्या पांडे की बहन रयसा ने हाल ही में अपनी बड़ी बहन के नक्शेकदम पर चलते हुए पेरिस में ले बाल देस डेब्यूटेंट्स में हिस्सा लिया। जैसे ही उन्होंने यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की, उनके पिता और बॉलीवुड अभिनेता चंकी पांडे ने इंस्टाग्राम पर एक थ्रोबैक वीडियो शेयर किया, जिसमें पेरिस में उनके साथ बिताए गए सभी शानदार पलों का दिखाया। क्लिप को कैप्शन देते हुए उन्होंने लिखा, फ़्लैशबैक लिबेल, पेरिस 2017, जहां अनन्या के लिए यह सब शुरू हुआ। उस समय रयसा सिर्फ 13 साल की थी। मुझे उस उम्र की अपनी लड़कियां याद आती हैं। क्लिप देखकर अनन्या भी भावुक हो गईं। इसलिए, उन्होंने वीडियो का स्क्रीनशॉट लिया और इसे अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया। तस्वीर में वह अपने प्यारे पिता के साथ डांस करती हुई दिखाई दे रही हैं। क्लिप देखने के बाद अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, हे भगवान, करीब 8 साल पहले यह कैसा था। काम की बात करें तो अनन्या पांडे को आखिरी बार विक्रमादित्य मोटवानी की स्क्रीनलाइफ थ्रिलर फिल्म में अभिनेता विहान सामत के साथ देखा गया था। इस साल, उन्होंने कॉल मी बे के साथ अपनी वेब सीरीज की शुरुआत भी की। अनन्या की कई आगामी फिल्में पाइपलाइन में हैं।

बोले- यह सब कहां से शुरू हुआ विश्वास नहीं हो रहा

खूंखार शिकारी है ये छोटी चिड़िया, अपने साइज के जीवों के लिए है यमराज!

जब भी शिकारी जानवरों की बात आती है तो जहन में शेर, चीता, बाघ जैसे बड़े जीव आते हैं। कई पक्षी भी गजब के शिकारी होते हैं। जिनमें चील, गिद्ध आदि शामिल हैं। पर आपको जानकर हैरानी होगी कि प्रकृति में कई ऐसी छोटी चिड़िया भी हैं, जो अपने साइज के हिसाब से मासूम प्राणी लगेंगी पर वो इतनी खतरनाक होती हैं कि मिनटों में अपने शिकार को मौत की नींद सुलाकर उसे खा जाती हैं। ऐसी ही एक चिड़िया का नाम है ब्लैक थाइड फैल्कनेट। ऑडिटी वेबसाइट की रिपोर्ट के अनुसार इस ब्लैक थाइड फैल्कनेट को सबसे छोटी छोटी 'बर्ड ऑफ प्रे' माना जाता है, यानी दूसरे जानवरों और पक्षियों को मारकर खाने वाली चिड़िया। साइज में ये पक्षी गौरैया जितनी छोटी होती है, पर अपने ही साइज के अन्य जीवों के लिए, जिनका ये शिकार करती है, यमराज से कम नहीं है। अगर ये उनके पीछे पड़ गई तो उनका शिकार कर, उन्हें अपना आहार बनाकर ही मानती है। इनका साइज 14 से 16 सेंटीमीटर तक होता है। वहीं इनके एक पंख से दूसरे का साइज 27 से 32 सेंटीमीटर तक होता है। इनका वजन भी कुछ ही ग्राम होता है। ये दिखने में बेहद क्यूट लगते हैं और खूबसूरत भी होते हैं, पर इनकी खूबसूरती से, इनके शिकार करने के हुनर को कम नहीं आंका जा सकता। ये चिड़िया कई तरह के कीड़ों, जैसे, पतिंगे, तितली, दीमक, आदि को शिकार बनाती है। पर कभी-कभी ये दूसरी अन्य छोटी चिड़िया, छिपकली और छोटे साइज के चमगादड़ों को भी अपना शिकार बना लेती है। ये काफी सामाजिक चिड़िया मानी जाती है क्योंकि ये जुंड में शिकार करती है। इनके झुंड में 10 पक्षी तक हो सकते हैं। किसी ऊपरी जगह से ये अपने शिकार पर नजर रखती हैं और फिर उनके ऊपर हमला कर देती हैं। ब्लैक थाइड फैल्कनेट, ब्रुनेई, म्यांमार, थाइलैंड, मलेशिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया जैसे देशों में पाई जाती है। ये अलग-अलग माहौल, वातावरण में आसानी से ढल जाती है।

अजब-गजब | हर ओर नजर आते हैं लकड़ी के लट्ठे

गाड़ियों की तरह लगा दिखता है जाम!

सड़क पर निकलते ही गाड़ियों के जाम में फंसना तो आम बात है। आपने गाड़ियों के कई ट्रैफिक जाम देखे भी होंगे पर क्या आपने कभी लकड़ी के लट्ठों का जाम देखा है? इसे लॉगजाम कहते हैं और ये कनाडा के नुनावुट में मैकेंजी रिवर डेल्टा पर पाया जाता है। विशेषज्ञों ने हाल की कुछ रिसर्च की हैं जिसके बाद पता चला है कि ये लॉगजाम दुनिया में सबसे बड़ा है और टनों कार्बन का भंडार भी है। साइंस अलर्ट वेबसाइट की रिपोर्ट के अनुसार ये लॉग जाम 51 वर्ग किलोमीटर में फैला है और पेड़ के तनों, लकड़ियों से बना है। दरअसल, मैकेंजी नदी के आसपास मौजूद जितने भी जंगल हैं, वहां से ये पेड़ बहकर नदी में आ जाते हैं और जहां-जहां नदियां मुड़ रही हैं, वहां रुकने लगते हैं। नदी की डेल्टा में भी ये जाकर इक्ट्ठा होते हैं और लॉगजाम बना लेते हैं। ये पेड़ के लट्ठे वो हैं, जो सदियों पहले सूखकर गिरे होंगे। इस जगह पर दूर-दूर तक सिर्फ लकड़ियों का ही जाम दिखाई देता है। शोधकर्ताओं की मानें तो लकड़ी के उन लट्ठों में 34 लाख टन कार्बन जमा है जो जलवायु परिवर्तन के लिहाज से भी खतरनाक है। ये कार्बन पूल का निर्माण करता है। ये उतना ही कार्बन है, जितना 25 लाख कारें पूरे एक साल में निकालेंगी। अमेरिका के कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी में शोध करने वाली वैज्ञानिक एलिशिया सैंड्रोवस्की का कहना है कि सालों से इसपर डाटा जुटाए गए हैं कि आर्कटिक में कैसे ये लकड़ी के लट्ठे पहुंचते हैं, पर अभी तक ये जानकारी नहीं है कि कितनी लकड़ी से मिलकर ये लॉगजाम बना है और कितना कार्बन उसमें कैद है। यूनिवर्सिटी ऑफ लौसेन की वैज्ञानिक वर्जीनिया रुइज विलैनुएवा का कहना है कि पानी और तलछट से कार्बन के प्रवाह पर काफी शोध की गई है पर लॉगजाम यानी लकड़ी पर शोध ही नहीं की गई। ये रिसर्च के लिए काफी नई दिशा है जिसमें तेजी से काम हो रहा है। रिपोर्ट के अनुसार आर्कटिक में लकड़ी के लट्ठे लंबे वक्त तक सुरक्षित रहते हैं क्योंकि वहां तापमान बहुत कम रहता है और मौसम में नमी बहुत कम है। हजारों साल पुराना लकड़ी का लट्ठा भी वैसा ही लगेगा जैसे पिछले साल का लट्ठा लगता होगा। मैकेंजी नदी में अलग-अलग समय के ये लट्ठे आसानी मिल जाएंगे। इस दिशा में काफी शोध की जा रही है जिससे पता लगाया गया कि एक जगह पर, जहां सबसे बड़ा लॉगजाम जमा है, उसका साइज 20 अमेरिकी फुटबॉल ग्राउंड के बराबर होगा। उसमें 7,300 टन कार्बन जमा है। वैज्ञानिकों का तो ये भी दावा है कि 34 लाख टन कार्बन का जो अंदाजा वो लगा रहे हैं, वो सिर्फ आसमान से जो लकड़ी के लट्ठे नजर आ रहे हैं, उन्हें देखकर लगाया जा रहा है। कई लट्ठे पानी के अंदर, मिट्टी में भी दबे होंगे।

पहले पुष्प वर्षा, फिर गोली बरसा

शम्भू बॉर्डर पर डटे किसानों ने लगाया आरोप

» सपा नेता धर्मेन्द्र यादव ने कहा- दोगली है सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सपा सांसद धर्मेन्द्र यादव किसानों पर चलाई गयी रबर की गोलियों से आहत है। उन्होंने कहा है कि सरकार जोकुछ भी कर रही है वह गलत कर रही है सरकार को किसानों से बात कर मुददे को हल करना चाहिए। दरअस्ल किसान नेता सरवन सिंह पंढेर ने आरोप लगाये हैं कि पुलिस ने शंभू बॉर्डर पर डटे किसानों पर रबड़ की गोलियां चलाईं। समाजवादी पार्टी के नेता धर्मेंद्र यादव ने इसकी निंदा करते हुए इसे देश के इतिहास में किसानों के साथ सबसे बड़ा धोखा बताया है।

धर्मेंद्र यादव ने कहा, हरियाणा में जो हुआ, मैं समझता हूं कि देश के इतिहास में किसानों के साथ इससे बड़ा धोखा नहीं हो सकता। पहले किसानों पर फूलों की बारिश की गई, लेकिन कुछ ही मिनटों में उन पर गोलियां चलाई गईं। आखिर किसानों ने क्या गलत मांगा था? जब भाजपा विपक्ष में थी, तब स्वामीनाथन रिपोर्ट की सिफारिशों को लागू करने की बात करती थी। आज वही पार्टी, जब किसान अपनी मांगों के लिए शांतिपूर्ण तरीके से दिल्ली मार्च कर रहे हैं, तो उन पर गोलियां चला रही है। दिल्ली केवल भारतीय जनता पार्टी के लिए नहीं, बल्कि देश के हर नागरिक के लिए खुली है। फिर किसानों पर जिस तरह से गोलीबारी की गई, यह बिल्कुल गलत है। पहले फूलों की बारिश करने के बाद किसानों पर गोली चलाई गई, यह धोखा था। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों को लागू करने की मांग तब से कर रही है, जब से सिफारिशें आई थीं और हम आगे भी संघर्ष करते रहेंगे। जो हमले किसानों पर हुए, हम उसकी कड़ी निंदा करते हैं और हर संघर्ष में किसानों के साथ खड़े हैं। यह कोई राजनीति का सवाल नहीं है, यह किसानों के अधिकारों का सवाल है। हमने पहले ही इस मुद्दे पर नोटिस दिया था, लेकिन हमें सदन में इसे उठाने का मौका नहीं दिया गया। हम चाहते थे कि सदन में किसानों की समस्याओं पर चर्चा हो, उनकी आमदनी में वृद्धि हो, उन्हें कानूनी अधिकार मिले और जो किसान शहीद हुए हैं, उनके परिवारों को मुआवजा मिले।

अखिलेश किसानों के साथ खड़े हैं: धर्मेन्द्र

उन्होंने कहा, किसानों की जो भी मांगें हैं, जैसे कर्ज माफी, मुकदमे की वापसी, और लखीमपुर खीरी में हुई हत्याओं पर कार्रवाई, समाजवादी पार्टी और अखिलेश यादव किसानों के साथ खड़े हैं। मुझे उम्मीद है कि इस मामले में सभी को सहयोग करना चाहिए, क्योंकि किसान का मुद्दा इतना महत्वपूर्ण है कि इस पर कोई विरोध नहीं होना चाहिए। अगर हमें सदन में बात करने का मौका नहीं मिला, तो हम आपके माध्यम से देश की जनता और किसान भाइयों के सामने अपनी बात रख रहे हैं।

वन नेशन वन इलेक्शन के लिए सरकार तैयार

» विधयेक पर आम सहमति बनाना चाहती है केंद्र सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नईदिल्ली। कैबिनेट ने वन नेशन, वन इलेक्शन पर रामनाथ कोविंद समिति की रिपोर्ट को पहले ही मंजूरी दे दी है। सूत्रों ने बताया कि सरकार अब विधेयक पर आम सहमति बनाना चाहती है और इसे विस्तृत चर्चा के लिए संयुक्त संसदीय समिति या जेपीसी के पास भेज सकती है। सूत्रों के मुताबिक जेपीसी सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से चर्चा करेगी। इस प्रक्रिया में अन्य स्टेकहोल्डर को भी शामिल किया जाएगा। चर्चा है कि संवैधानिक विशेषज्ञों के साथ सभी राज्यों की विधानसभा अध्यक्षों को इस चर्चा में शामिल किया जा सकता है। साथ ही इस विधेयक पर आम लोगों की राय लिये जाने की योजना है।

विचार-विमर्श के दौरान विधेयक के प्रमुख पहलुओं, इसके लाभ और देश भर में एक साथ चुनाव कराने के लिए आवश्यक कार्यप्रणाली और चुनावी प्रबंधन पर चर्चा की जाएगी। इस मुद्दे पर विपक्षी दलों से बातचीत की जिम्मेदारी केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, अर्जुन राम मेघवाल और किरेन रिजिजू को नियुक्त किया गया है। वन नेशन, वन इलेक्शन को लागू करने के लिए संविधान में संशोधन के लिए कम से कम छह विधेयक लाने होंगे और सरकार को संसद में दो-तिहाई बहुमत की जरूरत पड़ेगी। गौरतलब है कि एनडीए को संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा में साधारण बहुमत प्राप्त है। लेकिन, सदन में दो तिहाई बहुमत प्राप्त करना केंद्र सरकार के लिए चुनौती भरा कदम है। उल्लेखनीय है कि संविधान संशोधन के लिए मोदी सरकार को एनडीए से बाहर के दलों के सहयोग की भी जरूरत होगी।

फोटो :4 पीएम

निर्माण कार्य आज से आलमबाग अवध चौराहे पर अंडर पास बनने के लिए काम शुरू किया गया।

मुंबई बस हादसे में 8 की मौत, 35 घायल

» ड्राइवर ने ब्रेक फेल होने के बाद दबा दिया एक्सीलेटर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मुंबई के कुर्ला में हुए भीषण सड़क हादसे में मारे गए लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। अब तक 3 महिलाओं समेत 5 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। बेस्ट बस की चपेट में आने से 35 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों का डॉक्टरों की निगरानी में इलाज चल रहा है। पुलिस के अनुसार, मृतकों की पहचान आफरीन अब्दुल सलीम शाह (19) अनम शेख (20), कनिज फातिमा गुलाम कादिर (55) शिवम कश्यप (18) विजय विष्णू गायकवाड (70) के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि हादसा कुर्ला (वेस्ट) में एसजी बर्वे मार्ग पर अंजुमन-ए-इस्लाम स्कूल के सामने रात 9.50 बजे की है। 'बेस्ट' की एक अनियंत्रित बस ने कई वाहनों के टक्कर मार दी।

जिसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में तेज रफ्तार में एक बस लोगों को रौंदते हुए निकलती देखी जा सकती है। घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। कुछ घायलों को ऑटो में भी अस्पताल पहुंचाया गया है। हादसे के बाद दुर्घटना स्थल पर यातायात बाधित हो गया। पुलिस के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे। घायलों को भाभा अस्पताल के अलावा दूसरे अस्पताल भी ले जाया गया है। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना के वक्त बस में करीब 60 यात्री सवार थे। कुर्ला स्टेशन से निकली एक बस का ब्रेक फेल हो गया था। ड्राइवर ने बस पर से नियंत्रण खो दिया था। घबराहट में ड्राइवर ने ब्रेक दबाने की बजाय एक्सीलेटर दबा दिया और बस की गति बढ़ गई। बस पर नियंत्रण नहीं होने की वजह 30-35 लोगों को टक्कर मार दी।

बोरवेल में फंसे मासूम आर्यन को निकालने की जद्दोजहद जारी

दौसा। दौसा में बीते 18 घंटों से बोरवेल में फंसे एक 5 साल के बच्चे आर्यन को तमाम जदद्दोजहद के बाद भी नहीं निकाला जा सका है। जानकारी के अनुसार 5 साल का आर्यन अपनी मां के सामने ही घर से करीब 100 फीट दूर बोरवेल में गिर गया था। ये बोरवेल परिवार ने करीब 3 साल पहले खुदवाया था, लेकिन काम नहीं आ रहा था। बोरवेल से निकालने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। करीब 160 फीट गहरे बोरवेल में गिरे मासूम का अब तक रेस्क्यू नहीं हो सका है। करीब 18 घंटे से बोरवेल के आसपास 7 जेसीबी और 3 एलएनटी मशीनें खुदाई में लगी रहीं। अब देसी जुगाड़ से बच्चे को निकालने की कवायद की जा रही है।

भारत की डब्ल्यूटीसी फाइनल में खेलने की उम्मीदें बरकरार

» श्रीलंका के हारने से भारत को मिला फायदा

» अंकतालिका में शीर्ष पर पहुंची अफ्रीका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी फिलहाल 1-1 की बराबरी पर चल रही है। अगर भारत को डब्ल्यूटीसी फाइनल में जगह बनानी है तो उसे तीनों मैच जीतने होंगे और सीरीज 4-1 से अपने नाम करनी होगी। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडिलेड टेस्ट में हार से उसकी संभावनाओं को झटका लगा है और वह अगर मगर के फेर में पड़ गई है।

दक्षिण अफ्रीका ने हालांकि श्रीलंका को हराकर भारत की मदद कर दी है। दक्षिण अफ्रीका की जीत से श्रीलंका पर फाइनल की दौड़ से बाहर होने का खतरा मंडरा रहा है। भारत फिलहाल शीर्ष दो से बाहर है, लेकिन उसका लगातार तीसरे डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचने की संभावना बरकरार है। हालांकि, श्रीलंका पर बड़ी जीत से दक्षिण अफ्रीका इस दौड़ में प्रबल दावेदार के रूप में मजबूत हो गया है। बता दें दक्षिण अफ्रीका ने श्रीलंका को 2-0 से हराकर डब्ल्यूटीसी की अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गई है। भारत को रविवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे टेस्ट में 10 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था जिस कारण वह पहले से तीसरे स्थान पर खिसक गया था। अब दक्षिण अफ्रीका की पीसीटी 63.33 प्रतिशत है और वह ऑस्ट्रेलिया को पछाड़कर शीर्ष पर आ गया है, जबकि ऑस्ट्रेलियाई टीम दूसरे स्थान पर खिसक गई है। दक्षिण अफ्रीका को अगर अगले साल होने वाले डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचना है तो उसे पाकिस्तान के खिलाफ अगले दो टेस्ट मैच जीतने होंगे।

सिराज-हेड को नोकझोंक पड़ी भारी, आईसीसी ने लगाया जुर्माना

दुबई। भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज और ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाज ट्रेविस हेड को एडिलेड में खेले गए दूसरे टेस्ट मैच के दौरान मैदान पर नोकझोंक करना भारी पड़ गया है। आईसीसी ने इन दोनों पर जुर्माना लगाया है। सिराज पर मैच फीस का 20 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। हालांकि, हेड पर आर्थिक जुर्माना नहीं लगा है, लेकिन आईसीसी ने उन्हें भी सजा दी है। आईसीसी ने कहा कि हेड को भी खिलाड़ियों और खिलाड़ी के सहायक कर्मियों के लिए आईसीसी आचार संहिता के नियम 2.13 का उल्लंघन करने के लिए 'दंडित' किया गया था। हालांकि, वह किसी अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान किसी खिलाड़ी, खिलाड़ी सहायक कर्मियों, अंपायर या मैच रेफरी के साथ दुर्व्यवहार से संबंधित नियम का उल्लंघन करने के लिए जुर्माने से बच गए। सिराज और हेड के खाते में आईसीसी की आचार संहिता के उल्लंघन के कारण एक डिमेरिट अंक भी जोड़े गए हैं।

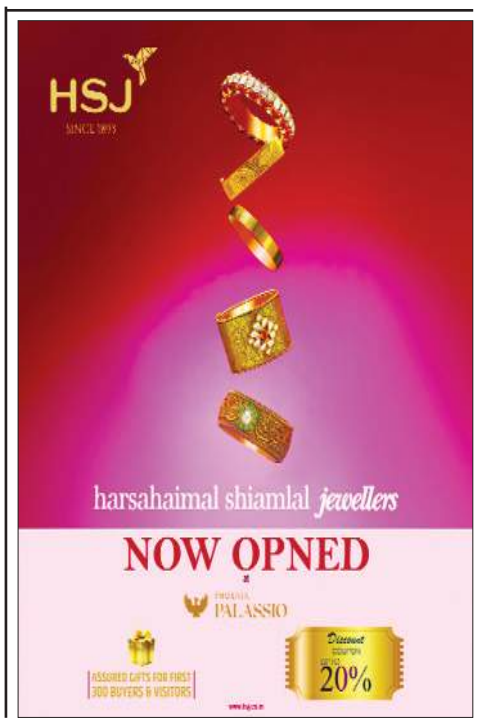

लालू के साथ से बन जाएगी ममता की बात!

इंडिया गठबंधन में नेतृत्व को लेकर बढ़ी खींचतान

» ममता को मिल रहा सहयोगियों का समर्थन

» सपा, शिवसेना के बाद अब राजद ने भी कांग्रेस को दिया झटका

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लालू प्रसाद यादव के समर्थन के बाद इंडिया गठबंधन की कमान ममता बनर्जी को मिलना तय हो गयी। या यूं कहे कि नये तेवर और कलेवर के साथ विपक्ष की एनडीए पर हमलावर होने की रणनीति बन चुकी है। ममता एक क्रांतीकारी नेता है और लालू प्रसाद यादव भी क्रांती लिख चुके हैं। समाजवादी पार्टी शिवसेना यूबीटी और एनसीपी शरद पावार के साथ राष्ट्रीय जनता दल का भी सपोर्ट ममता को मिल चुका है। वह खुद नेतृत्तव करने की बात जगजाहिर कर चुकी हैं। ऐसे में एनडीए को इंडिया गठबंधन के साथ नयी चुनौती मिलना तय है।

गौरतलब है कि तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दावा किया कि इंडिया गठबंधन का गठन मैंने किया है। अगर मुझे मौका मिलता है, तो मैं इसका नेतृत्व करूंगी। उनके इस बयान को विपक्षी राजनीति में बड़ी हलचल के रूप में देखा जा रहा है। सपा और शिवसेना (यूबीटी) ने ममता के इस दावे का समर्थन किया है। एक प्रेस वार्ता के दौरान ममता बनर्जी ने कहा, मैंने इंडिया गठबंधन का आइडिया दिया और इसके गठन में अहम भूमिका निभाई। यदि मुझे नेतृत्व करने का मौका मिलता है, तो मैं इसे बेहतर दिशा में ले जाऊंगी। उन्होंने इसे भारतीय राजनीति में बदलाव लाने के लिए जरूरी कदम बताया। समाजवादी पार्टी और शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) ने ममता के इस दावे का समर्थन किया। शिवसेना (क्त्र) के नेता संजय राउत ने कहा, ममता बनर्जी ने हमेशा विपक्ष को मजबूत किया है और उन्हें लीडरशिप के लिए समर्थन देना स्वाभाविक है। सपा नेता ने भी ममता के नेतृत्व की प्रशंसा की। ममता के बयान पर भाजपा ने विपक्षी एकता पर सवाल उठाए। भाजपा प्रवक्ता ने कहा, ममता का यह दावा दिखाता है कि विपक्ष को राहुल गांधी पर भरोसा नहीं है। इंडिया गठबंधन केवल नेतृत्व की लड़ाई बनकर रह गया है, जहां हर कोई नेता बनने की होड़ में है।

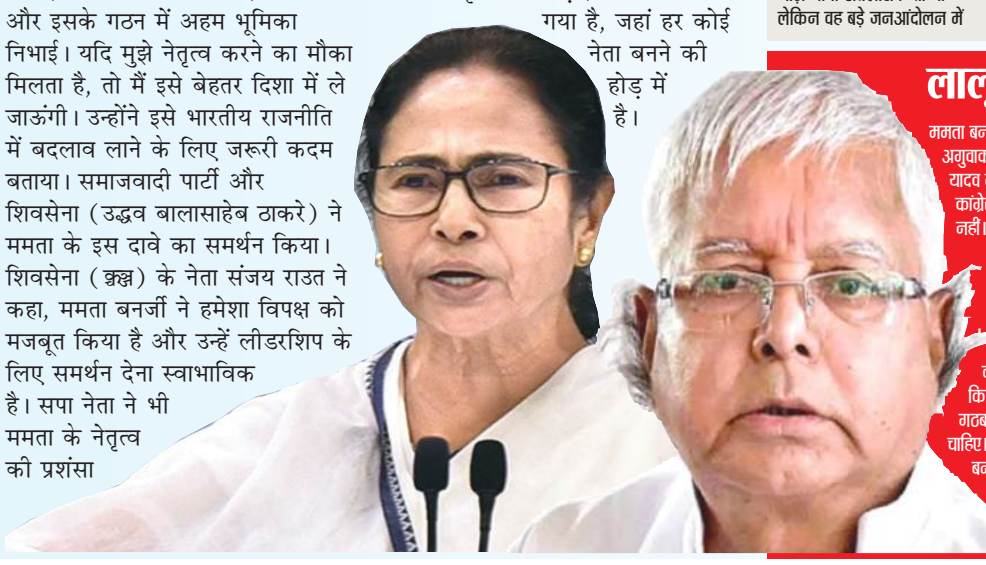

गठबंधन के लिए क्यों जरूरी हो गयीं ममता बनर्जी

इंडिया गठबधंन को इस बात का एहसास हो गया कि भाजपा की मोदी सरकार के खिलाफ एक बड़ा जनआंदोलन खड़ा किये बिना बात नहीं बनेगी। राहुल गांधी कि भारत जोड़ा यात्रा ऐतिहासिक तो थी लेकिन वह बड़े जनआंदोलन में तब्दील नहीं हो सकी। ?कांग्रेस भी चखो और मजे लो की तर्ज पर सियासत कर रही थी। उस यात्रा में गठबधंन पार्टियों के लिए कोई सियासी स्क्रिप्ट का न होना भी कांग्रेस और गठबधंन नेताओं की दूरी का कारण बना। ममता बनर्जी एक करिश्माई नेता है और वह कहीं भी बड़ा आंदोलन खड़ा कर सकती है। बिहार में लालू, उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव , दिल्ली में केजरीवाल से उनके अच्छे सियासी रिश्ते हैं। ऐसे में उम्मीद है ममता कुछ कर सके।

लालू का सपोर्ट

ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन के नये अगुवाकार की भूमिका पर लालू प्रसाद यादव ने कहा कि इस मुददे पर कांग्रेस की न का कोई मतलब नहीं। ममता बनर्जी आये और काम संभाले हमे उनकी जरूरत है। लालू प्रसाद यादव ने कांग्रेस से दूरी बनाते हुए ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन का नेतृत्व सौंपने की वकालत की है। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी को इंडिया गठबंधन का नेतृत्व दिया जाना चाहिए। हम 2025 में फिर से सरकार बनाएंगे। लालू प्रसाद यादव ने कहा कि इस मुददे पर कांग्रेस के विरोध का कोई मतलब नहीं है।

कहां से बढ़ेगी असहमति?

ज्यादातर लोगों का यही मानना है कि ममता के नाम आगे आने पर इंडिया गठबंधन में असहमति बढ़ेगी। लेकिन सूत्रों का यह कहना है कि सबकुछ तय शुदा स्क्रिप्ट पर हो रहा है। इस बात से किसी को गुरेज नहीं कि गठबंधन को महाराष्ट्र में बड़ी सियासी हार का सामना करना पड़ा है। गठबंधन महाराष्ट्र में जीत कर सियासत मे कमबैक की हसरत पाले था लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उल्टे उसका सूपड़ा साफ हो गया। घटक दलों की सियासत वहां काम नहीं आयी। या यूं कहें कि गठबंधन के नेता जनता की नीयत नहीं भांप सके। लोकसभा चुनावओं के बाद हरियाणा और महाराष्ट्र में मिली हार ने कांग्रेस के प्रति लोगों के रवैये को बदल दिया है। यही कारण है कि गठबंधन के अंदर भी कांग्रेस के नेतृत्व पर सवाल उठने लगे है। क्योंकि कांग्रेस के पास राहुल गांधी के अलावा दूसरा चेहरा नहीं है। इसलिए ममता को आग किया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल की फ्लीट की भिड़ीं गाड़ियां

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी में शहीदपथ पर मंगलवार सुबह हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला की फ्लीट में चल रही गाड़ियां आपस में भिड़ गई। हादसे में फ्लीट की गाड़ियों में कई चालक चोटिल हो गए। चोटिल सुरक्षा कर्मी और चालकों को आनन फानन अस्पताल ले जाया गया। जिस वक्त ये घटना हुई उस समय राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला एयरपोर्ट से हजरतगंज गर्वनर हाउस जा रहे थे। इस बीच लूलू माल के पास राज्यपाल और कुछ सुरक्षा कर्मियों की गाड़ियां आगे चल रही थी।

सूचना मिलते ही अपर पुलिस उपायुक्त राजेश यादव, ट्रैफिक पुलिस के टीएसआई और इंस्पेक्टर सुशांत गोल्फ सिटी अंजनी मिश्रा पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। राज्यपाल को सुरक्षा के घेरे में राजभवन भेजा गया। चोटिल चालक और सुरक्षा कर्मियों को अस्पताल ले जाया गया। अपर पुलिस उपायुक्त ने बताया कि राज्यपाल सुरक्षित हैं। उनकी गाड़ी पुलिस की गाड़ियों के साथ आगे थी। क्रेन मंगवाकर गाड़ियां हटवाई जा रही हैं। हादसे के दौरान करीब घंटे भर शहीदपथ पर वाहनों का आवागमन बंद रहा। इस दौरान सामान्य वाहनों को सर्विस लेन से गुजारा गया। इससे एकाएक सर्विस लेन पर ट्रैफिक लोड बढ़ने से जाम लग गया। करीब डेढ़ घंटे तक जाम की यह स्थिति बनी रही।

एक वाहन के चालक के अचानक ब्रेक लगाने से हुआ हादसा

पीछे फ्लीट में लगी जिप्सी के आगे चल रहे वाहन के चालक ने राजपूताना मैरिज लान के सामने एकाएक ब्रेक लगा दी। ब्रेक लगते ही करीब 80 से 100 की रफ्तार में पीछे चल रही बोलेरो, एंबुलेंस और अन्य गाड़ियां आपस में टकरा गई।

लखनऊ में लूलू मॉल के पास हुआ हादसा

मोदी सरकार ने टेक्सटाइल इंडस्ट्री कर दी बर्बाद

» आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार गुप्ता का केन्द्र सरकार पर आरोप

» 28 फीसदी जीएसटी बनी कोढ़ में खाज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता सुशील कुमार गुप्ता ने कहा कि कपड़ा उद्योग पर लागू की गई 28 फीसदी जीएसटी बेहद नुकसानदेह और बर्बादी का कारण है। उन्होंने दावा किया कि केंद्र का यह कदम भारतीय व्यापारियों को देश से बाहर करने की एक कोशिश है, जो देश की आर्थिक स्थिति के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

सुशील ने आरोप लगाया कि नरेंद्र मोदी की सरकार टेक्सटाइल इंडस्ट्री को बर्बाद करने पर तुली है। सरकार अच्छे व्यापारियों को देश से भगा देना चाहती है। आम आदमी पर टैक्स का बोझ बढ़ाकर सरकार गरीबों की समस्याओं को और बढ़ा रही है। जब तक वैट और सेल टैक्स थे, तब कपड़े पर कोई टैक्स नहीं होता था, लेकिन जीएसटी में सरकार ने पांच फीसदी टैक्स लगाया, कोविड के दौरान इसे 12 फीसदी तक कर दिया और अब 28 फीसदी तक पहुंच गया है।

सिसोदिया ने पहले ही जंगपुरा से चुनाव लड़ने का लिया था फैसला

मनीष सिसोदिया की सीट बदले जाने पर उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी भाजपा के कहने से नहीं चलती है। मनीष सिसोदिया ने पहले ही जंगपुरा से चुनाव लड़ने का फैसला लिया था और इस फैसले को पार्टी के भीतर पूरा सम्मान दिया गया है। उन्होंने कहा कि आप का कोई भी फैसला भाजपा के दबाव में नहीं होता और पार्टी अपने आंतरिक फैसलों पर ही काम करती है। सुशील ने किसान आंदोलन पर भी अपनी चिंता जताई और प्रधानमंत्री से आग्रह किया कि वह किसानों से मिलें। उन्होंने कहा कि केंद्र की सरकार ने जो वादा किया था कि एमएसपी की गारंटी का कानून बनाएंगे, वह पूरा नहीं किया। पूरे देश में 750 किसानों ने अपनी शहादत दी, लेकिन प्रधानमंत्री उस वादे को भूल गए। उनका यह व्यवहार पूरी तरह से असंवेदनशील है। मैं प्रधानमंत्री से निवेदन करता हूं कि वह किसानों से मिलकर उनका दुख-दर्द समझें और इस मुद्दे पर ठोस कदम उठाएं।

नहीं रहे पूर्व विदेश मंत्री एस. एम. कृष्णा, शोक की लहर

» राष्ट्रपति,पीएम समेत देश के अन्य नेताओं ने जताया दुख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्व विदेश मंत्री एस.एम.कृष्णा का 92 वर्ष की आयु में उनके बेंगलुरु स्थित आवास पर निधन हो गया। वह उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे थे। अपनी बौद्धिक क्षमता और प्रशासनिक कौशल के लिए पहचाने जाने वाले एस एम कृष्णा का राजनीतिक करियर पांच दशक से भी ज्यादा समय तक शानदार रहा।

उन्होंने 1999 से 2004 तक कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। यूपीए सरकार के तहत विदेश मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल ने एक प्रतिष्ठित राजनेता के रूप में रहा। उन्होंने महाराष्ट्र के राज्यपाल और कर्नाटक विधानसभा का अध्यक्ष पद भी संभाला। उनके निधन पर पीएम, राष्ट्रपति समेत देश के अन्य नेताओं ने दुख जताया।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा** द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **महाराष्ट्र कार्यालय**:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- **SSP/LW/NP-495/2018-2020** *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।